ग्रन्थमाला ‘धार्मिक कृत्य’ : देवतापूजन – खण्ड ६

आरती उतारनेकी शास्त्रोक्त पद्धति

हिन्दी (Hindi)

भूमिका

उपासकके हृदयमें स्थित भक्तिदीपको तेजोमय बनाने का एवं देवतासे कृपाशीर्वाद ग्रहण करनेका सुलभ शुभावसर है ‘आरती’ । सन्तोंकी संकल्पशक्तिद्वारा सिद्ध आरतियोंको गानेसे उपर्युक्त उद्देश्य निःसंशय सफल होते हैं; परन्तु यह तब सम्भव है जब आरतियां हृदयसे, अर्थात आर्त्तभाव से, उत्कण्ठासे एवं अध्यात्मशास्त्रीय दृष्टिकोणसे उचित पद्धतिसे गाई जाएं ।

कोई कृत्य हमसे आर्त्ततासे अर्थात अन्तःकरण-पूर्वक तब होता है, जब उसका महत्त्व हमारे मनपर अंकित हो । उस विषयके अध्यात्मशास्त्रीय आधार अथवा सिद्धान्तको समझनेपर उसका महत्त्व शीघ्र स्पष्ट होता है । इसी उद्देश्यसे आरतीके अन्तर्गत विविध कृत्योंका अध्यात्मशास्त्रीय आधार

इस लघुग्रन्थमें दिया गया है । उपासनामें कोई भी कृत्य अध्यात्मशास्त्रीय दृष्टिकोण अपनाकर उचित पद्धतिसे करना अत्यावश्यक है; क्योंकि ऐसे कृत्यका ही परिपूर्ण फल मिलता है । देवताकी आरती उनके अनाहतचक्रसे अर्थात हृदयस्थलसे आज्ञाचक्रतक उतारनी चाहिए, आरतीके समय ताली धीमेसे बजानी चाहिए एवं आरतीके उपरान्त देवताकी परिक्रमा अवश्य करनी चाहिए । ऐसे अनेक कृत्योंकी हमें जानकारी नहीं होती अथवा हो, तो भी कृत्य उचित पद्धतिसे नहीं होते । इस लघुग्रन्थसे हमें यह ज्ञात होगा कि अध्यात्मशास्त्रीय दृष्टिकोण अपनाकर प्रत्येक कृत्यको उचित पद्धतिसे कैसे करना चाहिए ।

श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है कि इस लघुग्रन्थमें बताए गए शास्त्रको समझकर आरती करनेसे प्रत्येक व्यक्तिकी अधिकाधिक भावजागृति हो । – **संकलनकर्ता**

पढें : सनातनका ग्रन्थ ‘आचारधर्मकी प्रस्तावना’

संक्षिप्त अनुक्रमणिका

- ग्रन्थके संकलनकर्ताका परिचय ५
- आध्यात्मिक परिभाषामें प्रस्तावना ८
- भूमिका ११
- आरती करनेका क्या महत्त्व है १३
- प्रातः एवं सायंकालमें आरती क्यों करें ? १६
- आरती करनेका सम्पूर्ण कृत्य १८
- आरतीसे पूर्व शंख क्यों एवं कैसे बजाएं ? २२
- आरती उचित उच्चारणसहित क्यों गाएं ? ३०
- आरतीके समय ताली एवं वाद्य कैसे बजाएं ? ३३
- 'त्वमेव माता, पिता त्वमेव' प्रार्थना क्यों करें ? ४२
- आरती ग्रहण करनेकी उचित पद्धति क्या है ? ४५
- आरतीके उपरान्त परिक्रमा क्यों करें ? ४७
- मन्त्रपुष्पांजलि-अर्पणका अध्यात्मशास्त्र क्या है ? ५०
- आरतीके उपरान्त देवताओंका जयघोष क्यों करें ? ५३
- संकलनकर्ताओंका वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं अन्य ५९